RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

जुलाई-सितंबर 2022

वर्ष : 15वां
अंक : 59वां

जैन बाल प्रतिभायें

संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

कार्यक्रमों की झलकियां

नवनिर्मित
आदिनाथ जिनालय,
करमेता जबलपुर

समयसार कीर्ति स्तंभ
जबलपुर

अष्टान्हिका महापर्व जबलपुर

जिनदेशना कार्यालय उद्घाटन, जबलपुर

जिनदेशना कार्यालय उद्घाटन, जबलपुर

चेतना 56

1. समाचार
2. अब नहीं छोड़ूँगा
3. कवर - कार्यक्रमों की झलकियाँ
4. कवर - जिनदेशना यूथ
5. कवर - गिरनार शिविर
6. कवर -
7. सूची
8. प्रेरक प्रसंग
9. प्रश्न आपके - समाधान जिनवाणी के
10. संपादकीय
11. बाजार का भोजन न बाबा न
12. जन्म दिवस / सहयोग
13. प्रतिभा
14. प्रतिभा
15. प्रतिभा
16. प्रतिभा
17. प्रतिभा
18. प्रतिभा
19. प्रतिभा
20. प्रतिभा
21. प्रतिभा
22. हमारा गौरवशाली इतिहास
23. हमारा गौरवशाली इतिहास
24. राम कथा के रहस्य
25. राम कथा के रहस्य
26. समाचार
27. पौराणिक कथा
28. पौराणिक कथा
29. शुद्ध देसी घी 23 रु.किलो...
30. अशोक स्तम्भ का सच
31. अशोक स्तम्भ का सच
32.
33.
34.-
35.
36.

धार्मिक कवितायें -

तोताराम

तोता बोला - राम - राम
कब ध्याओगे आतमराम
पहले जानो आतमराम,
पीछे जानो दूसरे काम।
आतम है आनंद का धाम,
मिलता जहाँ पूर्ण विश्राम।
जिनमंदिर में प्रभु का धाम,
तन मंदिर में आतमराम ।
छोड़ो सब संसार के काम,
जिनदर्शन है पहला काम।
प्रभु को लख, ध्या आतमराम,
जिससे मिलता मुक्तिधाम।
मैं तो रटने को बदनाम, तुम तो समझो आतमराम।
अवसर चूक न जाना राम, झटपट ध्याओ आतमराम।।

अनोखा सियार

एक सियार प्यासा था, रात्रि भोजन का त्यागी था।
जंगल-जंगल घूमता था, पानी ढूँढा करता था।।
उसे दिखी एक बावड़ी, उसमें पानी थोड़ा था।
बावड़ी में सीढ़ियाँ थीं, जल पीने की इच्छा थी।
सियार उतर गया नीे, अंधकार था नीचे।
बिना पिये वह पानी, ऊपर आया ज्ञानी।।
बाहर खूब उजेला था, अंदर घोर अंधेरा था।
दृढ़ प्रतिज्ञा वाला था सियार, मुनि वच का करता सत्कार।।
पानी से प्रीति छोड़ी, समता से निज देह तजी।
देव गति में पहुँचा सियार, नियम की दृढ़ता का सार।।
रात्रि भोजन नहीं करें, मोक्षमार्ग में सदा बढ़ें।।

रचनाकार - **अशोक जैन शास्त्री**, इंदौर

संपादकीय

चमत्कार को नमस्कार या सत्य को नमस्कार....

वर्तमान समय में सारा देश धर्ममय दिखाई दे रहा है। जैन समाज के चातुर्मास के आयोजन प्रारंभ हो गये हैं। आगे आने वाले चार महीनों में अनेक धार्मिक पर्व और आयोजन किये जायेंगे। टीवी के धार्मिक चैनलों पर उपदेशों की बरसात हो रही है। हर साधु और विद्वान अपने आयोजन को बेहतर बनाने का प्रयास कर रहे हैं। ''तुमसे बढ़कर हम'' की दौड़ में सिद्धांतों और आगम परम्परा को गौण किया जा रहा है। आज हर व्यक्ति चाहता है कि उसके जीवन में धन-वैभव, सुख-शान्ति हो और इन्हें प्राप्त करने के लिये धर्म के नाम पर कुछ भी करने को तैयार है। किसी को धन चाहिये तो किसी को व्यापार में वृद्धि, किसी को अपनी या अपने परिवार के सदस्य की बीमारी ठीक करवाना है तो किसी को अपने बेटे को नौकरी की चिंता है, किसी को अपने बेटे - बेटी के विवाह की चिन्ता है तो किसी को पद प्राप्त करने का नशा, किसी को अपने कार्यक्रम सफल करने की टेन्शन है तो किसी को अपनी प्रसिद्धि बढ़ाने की चिन्ता - कुल मिलाकर सारे कामों की चिन्ता है बस एक काम छोड़कर वह है आत्मकल्याण। उपदेशकों को अपना कल्याण तो नहीं करना पर जगत के कल्याण की चिन्ता में दुबले हुये जा रहे हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि यदि जगत के दुखी जीवों ने मेरी वाणी नहीं सुनी तो उनका कल्याण होना तो असंभव है।

सबसे दुःखद बात यह है कि निर्दोष और वीतरागी जैन धर्म में इच्छा पूर्ति और राग का रस दिखाई दे रहा है। बड़े-बड़े मंचों से खुलेआम शांतिधारा, छत्र चढ़ाने और कलश स्थापना से समृद्धि मिलने का लोभ दिखाकर समाज से धन एकत्रित किया जा रहा है। ऐसे में प्रश्न उपस्थित होता है कि जब शांतिधारा, प्रतिमा विराजमान करना, अन्य कार्यों से ही धन और लौकिक सुख मिलता है तो कर्म सिद्धांत का क्या मतलब रहा? जब शीलवती सीता, अंजना, चंदनबाला, अनंगसरा, मैनासुन्दरी जैसी अनेक महासतियों को भी कर्म का उदय भोगना पड़ा, भगवान पार्श्वनाथ, सेठ सुदर्शन, सुकुमाल, वीर निकलंक, गजकुमार, भगवान राम, तपस्वी पाँच पाण्डव, धन्यकुमार जैसे अनगिनत महापुरुष भी निर्दोष धर्मचर्या करने के बाद भी अपना पाप उदय नहीं टाल पाये तो लोभ के कारण से धर्म करने वाले लोग अपना कर्म उदय कैसे टाल सकते हैं ? जिन कार्यों से समाज को सुख समृद्धि के सपने बेचे जा रहे हैं तो वे कोरोना के समय में कहाँ गये थे ? जब पूरे विश्व में हाहाकार मचा था। अनेक महिलाओं की मांग सूनी हो गई, लाखों बच्चे अनाथ हो गये, हजारों माँ-बाप के सामने उनके पुत्र का कोरोना के कारण देह विलय हो गया। हजारों परिवारों के व्यापार बंद हो गये, कई नौकरियाँ चली गईं। पर सबकुछ भूलकर बेचारी... भोली समाज.... उपदेशकों के प्रभाव में उनकी झूठी बातों को सच मानकर अपना सबकुछ उन्हें समर्पित कर रही है। जिनमंदिरों का हिन्दूकरण किया जा रहा है। जिनमंदिरों की स्थापना आत्म कल्याण की भावना, वैराग्य, आत्मदर्शन, परिणामों में विशुद्धि के लिये की जाती है परन्तु इन बातों को गौणकर याचना और इच्छापूर्ति के केन्द्र लग रहे हैं। जिनमंदिर

और धार्मिक संस्थान व्यापारिक केन्द्र बन गये हैं। मस्तकाभिषेक मजाक बन गया है, लगातार कई-कई दिनों तक लाखों लीटर पानी बहाकर धर्म होने का प्रचार किया जा रहा है, इस बात की कतई चिन्ता नहीं है कि इससे प्रतिमाओं का क्षरण हो रहा है। कार्यक्रमों की सफलता के दो ही मापदण्ड हैं कि धन कितना एकत्रित हुआ और कितनी संख्या में जनता आई। कार्यक्रमों की संख्या तो बढ़ गई पर विशुद्धि कम हो रही है।

जिनमंदिरों में प्रतिमाओं की संख्या आवश्यकता के अनुसार नहीं बल्कि बजट के अनुसार तय होतीं हैं। भले ही जिनमंदिर बनने के बाद तीन लोक के नाथ की सेवा हो, चाहे न हो। हमारे ही नगर में एक नव निर्मित जिनमंदिर में प्रतिमाओं की संख्या इतनी अधिक कर दी है कि उनका विधिपूर्वक अभिषेक-प्रक्षाल संभव ही नहीं है। कई प्रतिमाओं में धूल लगी रहती है। इस काल की बलिहारी है कि पाप और पाप के उदय का डर ही समाप्त हो गया है।

और सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि ऐसा उनके द्वारा हो रहा है जिन्होंने परिग्रह से रहित परिपूर्ण आत्मसुख हेतु जैन धर्म के पालन की प्रतिज्ञा या दीक्षा ली है। धन और धनवानों को ही महत्व दिया जा रहा है। धन को धूल बताने वाले गुरु के शिष्यों में ही धन को भगवान माना जाने लगा है। बिना धन वालों को हीन दृष्टि से देखा जा रहा है। यहाँ तक विवाह सम्बन्धों में धार्मिक लड़के -लड़की चाहिये - यह कहकर सम्बन्धों की खोज करते हैं और विवाह सम्बन्ध इस बात से तय होता है कि लड़की वाले कितना अधिक खर्च कर सकते हैं और लड़का कितना अधिक कमाता है। धन के आगे धर्म और धार्मिक लोग गौण हो गये हैं। बचपन में गाये जाने वाले एक भजन के भाव शून्य हो गये हैं -

जग के दुःख की तो परवाह नहीं है, स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है।
मेटो जामन मरण होवे ऐसा जतन पारस प्यारा। मेटो मेटो जी संकट हमारा।

चातुर्मास तो आत्म आराधना का पर्व है। इस अवसर पर मुनिराजों और विद्वानों को जिनधर्म की महिमा से समाज को अवगत कराना चाहिये, जैन शासन के अकर्तावाद, अपरिग्रहवाद, अहिंसा, निमित्त-उपादान, कर्म सिद्धांत, मनुष्य पर्याय की दुर्लभता, मिथ्यात्व का फल, भेद विज्ञान का माहात्म्य, आत्मा की शक्तियाँ, दिगम्बर जैन शासन की पवित्र परम्परा जैसे अनेक विषयों का ज्ञान दिया जाना चाहिये। ये बताया जाना चाहिये कि -

"स्वयं किये जो कर्म शुभाशुभ फल निश्चय ही वे देते।स्वयं किये फल देय अन्य तो स्वयं किये निष्फल होते। अपने कर्म सिवाय जीव को कोई न कुछ देता कुछ भी।"

इस धर्म की पवित्रता और उद्देश्य को बनाये रखने के जिम्मेदारी उन प्रभावशाली उपदेशकों की है जिनके प्रभाव से समाज दिशा निर्देश प्राप्त करती है वरना जिनधर्म की गरिमा को ठेस लगेगी और यह अक्षम्य महाअपराध होगा।

- विराग शास्त्री

बाल प्रतिभा विशेषांक

चहकती चेतना का प्रस्तुत अंक जैन समाज की बाल प्रतिभाओं के लिये समर्पित किया गया है। इस विशेषांक का उद्देश्य समाज की प्रतिभाओं को योग्य मंच उपलब्ध कराना है जिससे उन्हें आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहन मिल सके और वे अधिक लगन व समर्पण के साथ अपनी कला में पारंगत हो सकें। चहकती चेतना परिवार इन सभी बच्चों के उज्जवल व मंगल भविष्य की मांगलिक कामना करता है। – संपादक

मोक्ष प्रतीक जैन, कोलकाता

कोलकाता निवासी 10 वर्ष के मोक्ष जैन बचपन से पारिवारिक, धार्मिक संस्कारों से भरे हुये हैं। मोक्ष को मेरी भावना, छहढ़ाला की पहली ढ़ाल, समाधि भावना, बारह भावना, अनेक अर्घ्य और अनेक स्तुतियाँ कंठस्थ हैं। कोलकाता जैसे महानगर में भी जैनाचरण का पालन करने वाले मोक्ष का रात्रि भोजन का त्याग है। यदि किसी कारण वह शाम को भोजन नहीं कर पाता तो वह रात्रि हो जाने के कारण भोजन नहीं करता। प्रति सप्ताह लगने वाली पाठशाला का नियमित छात्र लौकिक क्षेत्र में भी प्रतिभाशाली है। वह पढ़ाई में बहुत होशियार है। पाठशाला के पुरस्कारों के साथ उसे लौकिक क्षेत्र में भी अनेक पुरस्कार प्राप्त हुये हैं। मोक्ष रुचिवान साधर्मी श्री प्रतीक जैन के पुत्र हैं और मोक्ष के दादा डॉ.के.सी. जैन और दादी श्रीमति रानी जैन, छिंदवाड़ा भी स्वाध्याय रुचिवंत होने के साथ तन-मन-धन से जिनशासन के प्रति समर्पित हैं।

चहकती चेतना परिवार मोक्ष के मंगल जीवन की कामना करता है।

दिव्यार्य सचिन जैन, ललितपुर उ.प्र.

उत्तरप्रदेश के ललितपुर नगर में रहने वाले दिव्यार्य बचपन से प्रतिभाशाली और धार्मिक रुचिवंत हैं। उसे आचार्य उमास्वामी रचित मोक्षशास्त्र के 10 अध्यायों के सभी 357 संस्कृत सूत्र याद हैं। साथ ही दिव्यार्य पेन्टिंग, अभिनय में भी कुशल हो रहा है। उसे ऑनलाइन पेन्टिंग प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त हुआ है। साथ ही जिनधर्म के प्रति रुचिवंत दिव्यार्य यथासंभव जैन आचरण पालन करने का प्रयास करता है।

दिव्यार्य को चहकती चेतना की ओर से धर्ममय जीवन की मंगल शुभकामनायें।

कु. श्रेया जैन सुपुत्री डॉ. मनीषा जैन, दमोह

कहा जाता है कि जैसा परिवार वैसे संस्कार। 12 वर्ष की कु. श्रेया को धर्म में विशेष रुचि है। उसे अनेक स्तोत्र पाठ याद हैं। साथ ही वह नृत्य में भी कुशल है।

स्वस्ति और स्वयंभू झांझरी, चंद्रपुर महा.

कहते हैं जैसा परिवेश होता है बच्चों का विकास भी उसी अनुसार होता है। महाराष्ट्र के चंद्रपुर निवासी श्री अंशुल झांझरी की 7 वर्षीय पुत्री कु. स्वस्ति और 6 वर्षीय स्वयंभू कमाल की भाई-बहन हैं। इस छोटी सी उम्र मे स्वस्ति और स्वयंभू को प्रभु पतित पावन, अति पुण्य उदय मम आया, सकल ज्ञेय ज्ञायक, वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, मेरी भावना, छहढ़ाला की 4 ढ़ाल, बारह भावना, मंगल शृंगार पाठ कंठस्थ हैं। साथ ही स्वस्ति को समयसार की मूल प्राकृत की 60 गाथायें, प्रवचनसार ग्रन्थ के प्रथम अधिकार की गाथाओं के हिन्दी पद्यानुवाद याद हैं। इतना ही नहीं दोनों को चार पूजन भी याद हैं। प्यारी बातें करने वाली और जिनधर्म की महिमा से ओतप्रोत स्वस्ति के इस मंगल कार्य की अनुमोदना और उसके धर्ममय मंगल जीवन की कोटि-कोटि शुभकामनायें।

सहजता आशीष जैन, मुम्बई

मुम्बई निवासी 7 वर्षीय कु. सहजता जन्म से धार्मिक संस्कारों के परिवेश में रही है। इसका सुफल यह है कि सहजता को समयसार कलश याद है। सहजता का जमीकंद सेवन का त्याग है। बाल शिविरों में सहभागिता करना उसे अच्छा लगता है। अभी मई माह में ही देवलाली में हुये बाल शिविर में अपने माता-पिता के बिना रहकर बहुत साहस दिखाया और शिविर में अपने माता-पिता के बिना रहकर बहुत साहस दिखाया और शिविर के हर कार्यक्रम में सम्मिलित हुई। सहजता पेन्टिंग में, पियानो बजाने में और गाने में भी बहुत रुचि रखती है। सहजता की माँ विदुषी हैं और नानी डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई लौकिक कार्य के साथ तत्व प्रचार में समर्पित हैं । चहकती चेतना परिवार सहजता के सफल और सुखद जीवन की मंगल कामना करता है।

कु. लब्धि प्रमोद जैन, जयपुर

यदि व्यक्ति में प्रतिभा है तो वह किसी अवसर की प्रतीक्षा नहीं करता बल्कि अवसर उस व्यक्ति की प्रतीक्षा करता है। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है लब्धि जैन। लब्धि ने 11 वर्ष की छोटी उम्र में महान काम किया है। लब्धि को आचार्य अमृतचन्द्र देव रचित आत्मख्याति टीका के संस्कृत में लिखे हुये 272 कलश याद हैं। इन्हीं कलशों के हिन्दी पद्यानुवाद के रूप में पण्डित बनारसीदासजी द्वारा लिखित नाटक समयसार के 136 छन्द, आचार्य उमास्वामी द्वारा रचित तत्वार्थ सूत्र के पूरे 357 सूत्र, कुन्दकुन्द शतक, सम्पूर्ण भक्तामर स्तोत्र, छहढ़ाला की तीन ढ़ाल अच्छी तरह याद हैं। कई विषय तो उसे नम्बर याद हैं जो जिस नम्बर का छन्द पूछें तो वह तुरन्त उसी नम्बर का छन्द, श्लोक को बिना देखे तुरन्त बोल देती है। लब्धि के अनेक विषयों के वीडियो यूट्यूब और फेस बुक पर देखे जा सकते हैं। लब्धि के पिता श्री प्रमोद शास्त्री एक समर्पित विद्वान और गहन अध्ययन के धनी हैं। लब्धि के धर्मवृद्धि की मंगल कामना।

ऋद्धेश रोहित-ऋचा जैनी , सिएटल

जिनके मन में कुछ करने का संकल्प होता है उसे कोई भी देश या समय बाधा पैदा नहीं कर सकती। अमेरिका के सिएटल शहर निवासी ऋद्धेश जैनी ने vessJeve-meyeble नामक यूट्यूब चैनल बनाया है। इस चैनल के माध्यम से ऋद्धेश जैन धर्म के सिद्धान्तों को सरल भाषा में समझाते हैं। जैसे- जाप की माला में 108 दाने ही क्यों होते हैं, हमारे देश का भारत कैसे हुआ? साथ ही ऋद्धेश को छहढ़ाला की पहली ढ़ाल, बारह भावना और अनेक स्तुतियाँ याद हैं। ऋद्धेश एक कुशल वक्ता भी है। ऋद्धेश ने कई अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में वक्तव्य दिये है। जैन आचरण का पालन करने वाले ऋद्धेश रात्रि भोजन नहीं करते। सिएटल में ठंड के दिनों में शाम 4 बजे रात्रि हो जाने के कारण 4 बजे के पहले ही भोजन कर लेते हैं। प्रतिसप्ताह जिनेन्द्र अभिषेक और पूजन करने वाले ऋद्धेश ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि हमारे मन में सच्चा जैनी बनने की भावना है तो कोई भी क्षेत्र, काल, परिस्थिति आपके संकल्प को पूरा करने में नहीं बाधा नहीं कर सकती। ऋद्धेश की मम्मी श्रीमति ऋचा जैनी भी जैन धर्म की विदुषी हैं और नानी विदुषी राजकुमारी जैन आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन दिल्ली की निदेशिका हैं।

दर्शील अमरेश जैन, पुणे

पुणे निवासी कक्षा चौथी में पढ़ने वाले दर्शील की बात ही निराली है। 9 वर्षीय दर्शील जन्म से ही रात्रि भोजन, जमीकंद सेवन, बाजार की बनी वस्तुयें, केक, चॉकलेट, बिस्किट, आईसक्रीम, टूथपेस्ट आदि का त्याग है। वह पाठशाला का नियमित विद्यार्थी है। उसे भक्तामर स्तोत्र के 36 श्लोक, स्तुतियाँ, विनय पाठ, पूजन याद हैं। कोरोना काल में ऑनलाईन भोजन शुद्धि परिचर्चा में भी दर्शील को सन्मानित किया गया है। लौकिक शिक्षा के क्षेत्र में Antergat Mathematics Competitions में भी पुरस्कार प्राप्त हुये हैं।

हस्ति रिया नयन शाह, हैदराबाद

बेटियाँ भी कमाल होतीं हैं, कभी कभी वे बेमिसाल होतीं हैं। इस बात को सिद्ध किया है हैदराबाद मे रहने वाली हस्ति शाह ने। मात्र 9 वर्ष की हस्ति ने को दर्शन पाठ, प्रभु पतित पावन, वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, पंचपरमेष्ठी स्तुति, मंगलाष्टक, समयसार ग्रन्थराज की 16 गाथायें, आत्मा की 47 शक्तियाँ, अनेक धार्मिक बाल कवितायें कंठस्थ हैं।

हस्ति की ही बहन 8 वर्षीय रिया भी अपनी बहन से पीछे नहीं है। उसे भी अनेक स्तुतियाँ, पंचपरमेष्ठी स्तुति याद है। दोनों बहनों के माता-पिता एवं दादी भी धार्मिक संस्कारों से ओत प्रोत हैं और जिनधर्म प्रभावना के कार्यों में अपना योगदान सदा देते रहते हैं।

दोनों प्यारी बेटियों के मांगलिक जीवन की शुभकामनायें।

उन्नति अमरीश जैन, अहमदाबाद

अहमदाबाद के नरोड़ा में रहने वाली 13 साल की उन्नति अपने नाम के अनुरूप उन्नति कर रही है। उन्नति के बचपन से ही रात्रि भोजन त्याग, प्रतिदिन देवदर्शन का नियम, बिना छने पानी का त्याग, अष्टमूल गुणों का पालन जैसे नियमों का पालन करती ही है। साथ ही उसे अनेक भक्तियाँ याद हैं, उसे ग्रन्थराज समयसार की गाथाओं के गुजराती पद्यानुवाद की 60 गाथायें, बारह भावना, छहढ़ाली की 3 ढ़ाल, आलोचना पाठ, देव स्तुति, समाधि भावना आदि याद हैं। इतना ही नहीं उन्नति क्लासिकल डांस में भी कुशल है और गाने में भी होशियार है। उन्नति ने अनेक मंचों पर अपनी कला का प्रदर्शन किया है।

उन्नति की तरह ही उसका 6 वर्ष का छोटा भाई प्रथम आगे बढ़ रहा है। उसे भी उन्नति की तरह सारे पाठ,स्तुति आदि और ग्रन्थराज समयसार की गाथाओं के गुजराती पद्यानुवाद की 38 गाथायें याद हैं। प्रथम प्रतिदिन जिनेन्द्र अभिषेक के बाद अपनी बहन की तरह ही जिनेन्द्र पूजन करता है। दोनों भाई-बहन प्रातः 5:30 बजे उठ जाते हैं।

दोनों भाई- बहनों के धर्ममय जीवन की सफलता की मंगल कामना।

पार्थ रजनीश जैन, पिड़ावा (राज.)

राजस्थान के झालावाड़ के पिड़ावा नगर के निवासी 8 साल के पार्थ को जैन धर्म की बहुत रुचि है। उसे जैन धर्म की अनेक पौराणिक कहानियाँ याद हैं। साथ ही उसे अनेक भजन और अनेक पूजनों के अनेक छन्द याद है। साथ ही धार्मिक आचरण से जीवन व्यतीत करने वाले पार्थ के धर्ममय जीवन की मंगलमय शुभकामनायें।

भव्या नरेश जैन

8 साल की भव्या बहुत प्रतिभाशाली बालिका है। वह इस छोटी सी उम्र में ही काव्य कला में कुशल है, उसे स्तुति, भक्तामर के काव्य याद हैं। साथ ही वह बहुत अच्छी ड्राइंग बनाने लगी है। प्यारी सी भव्या को उसके सुखद भविष्य की मंगल कामना।

शाह प्रांजल नवीन, भयंदर, थाणे महा.

मुम्बई के नजदीक भायंदर उपनगर निवासी 8वर्षीय प्रांजल को बचपन से धर्म रुचिवंत है। छोटी सी उम्र में उसे अनेक जिन स्तवन और मंगलाचरण याद हैं। जिनमंदिर के कार्यक्रम में भी उत्साह से भाग लेने वाली प्रांजल धार्मिक आचरण में बहुत सजग है। प्यारी बेटी प्रांजल के सुखद भविष्य की चहकती चेतना की ओर से मंगल शुभकामनायें।

देशना अतीत शाह, गांधीनगर (गुज.)

जिसका संकल्प जैसा उसका कार्य वैसा। गुजरात की राजधानी गांधीनगर में रहने वाली 15 वर्षीय देशना अपने हुनर और प्रतिभा का उपयोग जिनधर्म में करती है। बचपन से धार्मिक परिवेश में पली बढ़ी देशना के दादा श्री देवेन्द्र शाह और दादी श्रीमति कुसुम शाह जिनधर्म के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं। स्वयं पूजन, स्वाध्याय आदि कार्यों के साथ जिनधर्म की प्रभावना में उत्साहित होकर योगदान देते रहे हैं। देशना के माता-पिता भी इन्हीं संस्कारों से ओतप्रोत हैं। देशना बचपन धार्मिक बाल संस्कार शिविरों में जाती रही है। उसे जिनधर्म की अनेक गाथायें, सूत्र, बाल गीत आदि याद हैं। वह पेन्टिंग में सिद्धहस्त हो रही है। ऐसी होनहार बेटी देशना के उज्ज्वल भविष्य की मंगल शुभकामनायें।

श्रेयांस अनिमेष समैया, सागर

लगन हो तो हर बचपन के संस्कार छूटते नहीं हैं। मध्यप्रदेश के सागर नगर के निवासी 18 वर्षीय युवा श्रेयांस समैया को छहढ़ाला, लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका, तत्वार्थ सूत्र का प्रथम अध्याय, अमूल्य तत्व विचार, बारह भावना, देव-शास्त्र-गुरु पूजन, भक्तामर स्तोत्र, अपूर्व अवसर, मंगल शृंगार, मंदिर विधि, मेरी भावना, समयसार स्तुति आदि अनेक पाठ कंठस्थ हैं। श्रेयांस श्री अनिमेष समैया और श्रीमति प्रियंक समैया के सुपुत्र हैं। श्रेयांस जीवन के सभी परिस्थितियों में जिनधर्म का पालन करते रहें - यही मंगल कामना।

आदि जैन, कोलकाता

हावड़ा कोलकाता निवासी आदि जैन कोलकाता जैसे महानगर में रहते हुये भी जिनधर्म की रुचि रखता है। आदि को भक्तामर स्तोत्र के 27 काव्य कंठस्थ हैं। आदि एक्टिंग में कुशल है। आदि ने धार्मिक मंच पर अभिनय का प्रदर्शन किया है।

श्रुत राजेश जैन

मात्र 4 साल के श्रुत हैं तो छोटे, पर कमाल के हैं। माता-पिता के धार्मिक संस्कारों के संपन्न श्रुत को भक्तामर के 8 काव्य याद हैं और वह अनेक भजन आदि याद कर रहा है। साथ ही वह ड्राइंग में कुशल हो रहा है।

आशना सिंघई,

प्रतिभा की कोई मर्यादा नहीं होती। उचित प्रतिभा आकाश छूना चाहती है। ऐसा ही कुछ कर रही है उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद की आशना सिंघई। साढ़े सात वर्ष की आशना अनेक उपलब्धियों के साथ आगे बढ़ रही है। आशना एक प्रमाणित एंड्राइड और आइओएस ऐप डेवलपर हैं। आशना प्रतिष्ठित संस्था द्वारा "कोरोना को हराना है" विषय पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में भाग ले चुकी है जिसे लोकप्रिय समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित किया गया था। आशना से कोरोना से जंग नाम एक गीत भी गया है जिसे काफी लोगों द्वारा यू ट्यूब पर पसंद किया गया था। आशना धार्मिक क्षेत्र में भी बहुत लगन रखती है। उसने अपने स्कूल में आयोजित धार्मिक प्रतियोगिता में मेरी भावना गीत गाया और अभिनय कला के रूप में जैन समुदाय की रानी अब्बाका के पात्र का अभिनय किया था। साथ ही आशना को भक्तामर के 10 काव्य, पार्श्वनाथ स्तोत्र, पूजन विधि, विनय पाठ, नवदेवता पूजन आदि भी याद हैं। पाठशाला के अध्ययन करते हुये प्रथम लेबल पूर्ण कर चुकी हैं।

चहकती चेतना परिवार आशना जिनधर्म की रुचि बढ़ने और सुखद जीवन की मंगल कामना करता है।

ईर्या अक्षत बाकलीवाल अकोला (महा)

परिवार में हों तो बच्चे बनें होशियार - इस बात को चरितार्थ किया है महाराष्ट्र के अकोला शहर की 13 वर्षीय बेटी ईर्या बाकलीवाल जिनधर्म के प्रति बहुत समर्पित है। पारिवारिक संस्कारों से बढ़ रही ईर्या को दर्शन पाठ, 4 देव स्तुति, नीरव निर्झर, अमूल्य तत्व विचार, आलोचना पाठ, वैराग्य भावना, सम्पूर्ण छहढ़ाला, भक्तामर स्तोत्र, पार्श्वनाथ स्तोत्र, महावीराष्टक स्तोत्र, 2 बारह भावना, तत्वार्थ सूत्र के सभी 357 सूत्र, समयसार के 11 कलश, शुद्धात्म शतक के 30 छन्द, आत्म कीर्तन, मंगल श्रृंगार, समाधि मरण आदि बहुत कुछ कंठस्थ है।

इस छोटी उम्र में जिसके कंठ में जिनधर्म के मंत्र समाहित हो गये हैं उसका सम्पूर्ण जीवन मंगलमय होगा। चहकती चेतना परिवार ईर्या के मंगलमय जीवन की मंगल कामना करता है।

निभृति रजत जैन बैंगलोर

प्रतिभा के लिए कोई उम्र का बंधन नहीं होता। इस बात को सिद्ध किया है छः वर्ष की निभृति जैन ने। इस छोटी सी उम्र में निभृति को देव-शास्त्र-गुरु पूजन के अष्टक, धर्म के दशलक्षण, णमोकार मंत्र का शुद्ध उच्चारण, छह द्रव्य, सात तत्व, भक्ति, जीव-अजीव की भिन्नता, समयसार की एक गाथा, भगवान बनेंगे गीत आदि बहुत कुछ कंठस्थ है। निभृति के पिता श्री रजतजी भी अच्छे स्वाध्यायी और जिनधर्म के प्रति समर्पित साधर्मी हैं। माता-पिता की धर्ममयी छांव में निभृति इसी तरह जिनमार्ग में लगी रहे - पत्रिका परिवार की ऐसी मंगल कामना।

प्रमिति सुनील जैन, जयपुर

प्रतिभायें अपना रास्ता स्वयं खोज लेतीं हैं। कला के एक विशेष क्षेत्र में स्थान बना रहीं जयपुर निवासी 10 साल की प्रमिति पेन्टिंग में बहुत होशियार है। अपनी विशेष काल्पनिक शक्ति से रंगों के आसमान में अपनी प्रतिभा का प्रयोग करती हुई प्रमिति की कला देखने लायक है। प्रमिति जिनधर्म में बहुत रुचि रखती है। प्रमिति अपने हुनर से मंजिल को प्राप्त करे - ऐसी मंगल कामना है।

श्रेया मनीष जैन अकोला फुटेरा म.प्र.

जिनधर्म का मंगल प्रभाव मात्र शहरी बच्चों में ही नहीं बल्कि गांवों में भी सभी वर्ग में जिनधर्म का प्रभाव देखा जाता है। मध्यप्रदेश के दमोह के छोटे से गांव फुटेरा में रहने वाली 12 वर्षीया श्रेया जैन को भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, पार्श्वनाथ स्तोत्र, महावीराष्टक, मंगलाष्टक आदि अनेक चीजें याद हैं। साथ ही नित्य देव दर्शन के साथ अनेक नियमों का पालन करती है। चहकती चेतना परिवार श्रेया के श्रेयपूर्ण जीवन की मांगलिक कामना करता है।

सौम्या सुनील जैन, मुम्बई

मन में संकल्प हो और लगन सच्ची हो तो बाहर का दूषित वातावरण भी हमें प्रभावित नहीं कर सकता। इस बात को सत्य कर दिखाया है मुम्बई निवासी 10 साल की सौम्या जैन ने। बचपन से ही धार्मिक संस्कारों से युक्त परिवार में रहने वाली सौम्या को आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार की प्राकृत में 38 गाथायें, इष्टोपदेश ग्रन्थ की 10 गाथायें, तत्वार्थ सूत्र का प्रथम अध्याय, आत्मा की 47 शक्तियाँ, दर्शन पाठ, दर्शन स्तुति, मंगलाष्टक, अमूल्य तत्व विचार याद हैं। कोरोना काल में सौम्या ने 8 बाल शिविरों में सहभागिता की और नाटक, अभिनय, प्रवचन आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया। मुम्बई जैसे नगर में भी प्रतिदिन देव दर्शन करने वाली सौम्या मंदिर के हर कार्यक्रम में उत्साह से भाग लेती है। इसके अलावा सौम्या स्केचिंग, भरतनाट्यम में कुशल हो रही है। सौम्या जिनधर्म की लोरी एलबम के गीत में भी काम कर चुकी है। अनेक गुणों से संपन्न सौम्या के सुखद और धर्ममय जीवन की अनेक शुभकामनायें।

सम्यक सुनील जैन मुम्बई

सौम्या के बड़े भाई सम्यक् भी अपने नाम को सार्थक कर रहे हैं। सम्यक को समयसार की 75 प्राकृत गाथाओं के साथ उनके पद्यानुवाद भी याद हैं। साथ ही तत्वार्थ सूत्र के दो अध्याय, छहढ़ाल की 5 ढ़ाल, मंगलाष्टक, अमूल्य तत्व विचार, बारह भावना, 100 जैन ग्रन्थों के नाम और उनके रचनाकार के नाम, जैन धर्म के भेद-प्रभेद की 1 से 80 तक की गिनती याद हैं। प्रतिदिन जिनेन्द्र अभिषेक और पूजन करने वाले सम्यक ने कोरोना के समय में अनेक शिविरों में सहभागिता करके शिक्षण के साथ नाटक, फैंसी ड्रेस, भाषण आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

सम्यक इसी तरह धर्ममार्ग में चलते हुये लौकिक मार्ग में भी सफलता प्राप्त करे - चहकती चेतना परिवार की ऐसी मंगल कामना।

विशुद्धि और प्रसिद्धि नीतेश शास्त्री, दुबई

जहाँ चाह वहाँ राह। इस प्रसिद्ध कहावत को अपने जीवन का मंत्र बनाया है 15 वर्षीय विशुद्धि और 11 वर्षीय प्रसिद्धि इन दोनों बहनों ने। जयपुर की मूल निवासी और वर्तमान में दुबई में रहने वाली इन दोनों बहनों को दुबई की चकाचौंध भी अपने रंग में नहीं रंग पाई। इन दोनों बहनों को अनेक पूजनें, भजन, स्तुतियाँ, छहढ़ाला, भक्तामर के साथ तत्वार्थ सूत्र और इष्टोपदेश के सूत्र व श्लोक याद हैं। दोनों बहनें टीवी नहीं देखतीं । नये कपड़े खरीदने के पहले पुराने कपड़े दान करना, णमोकार मंत्र पढ़कर ही भोजन ग्रहण करना, अभक्ष्य भक्षण का त्याग, बाजार की वस्तुओं के त्याग, सादगी से जीवन व्यतीत करना, प्रतिदिन किसी न किसी का मदद करना उनके जीवन के नित्य कार्य हैं। दोनों बहनें अभिनय, नृत्य, पेन्टिंग, खेलकूद, संगीत, गायन आदि कलाओं में भी पारंगत हैं। वे समय - समय पर होने वाली अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लेतीं हैं उन्हें अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। इन्होंने जैन संस्कार टीवी के नाम से यूट्यूब चैनल बनाया है जिसमें वे समय-समय पर जिनधर्म प्रभावना के वीडियो बनाकर पोस्ट करतीं हैं। अभी इस चैनल पर 250 से अधिक वीडियो अपलोड किये हैं। ये बहनें सिद्धम पाठशाला, अर्हम पाठशाला, जिनम पाठशाला नियमित छात्रा हैं। कोरोना काल में इन दोनों ने 20 से अधिक धार्मिक बाल शिविरों में सहभागिता की। इन दोनों के जीवन के इस सुन्दरता के लिये इनके पिता डॉ. नीतेश शाह और मम्मी श्रीमति अनुश्री शाह का विशेष योगदान है।

चहकती चेतना परिवार कामना करता है कि विशुद्धि और प्रसिद्धि दोनों जिनधर्म के आचरण की दृढ़ता कायम रखते हुये जीवन के हर क्षेत्र में सफल रहें।

आर्जव चिन्तामण भुस कारंजा महा.

छोटी सी उम्र पर कमाल की प्रतिभा । महाराष्ट्र के कारंजा नगर में रहने वाला 6 साल का आर्जव भुस कमाल का बालक है। एक साथ अनेक प्रतिभाओं के धनी आर्जव को श्री समयसार ग्रन्थराज की 38 प्राकृत गाथायें, श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार का प्रथम अध्याय, छहढ़ाला की प्रथम ढ़ाल, तत्वार्थ सूत्र का प्रथम अध्याय, महावीर वंदना, देव स्तुति, जैन धर्म की गिनती, भगवान महावीर की 11 शिक्षायें, मेरा धाम गीत, दशधर्म की 10 कवितायें, मोक्षमार्ग प्रकाशक सभी अध्यायों के मंगलाचरण, विनय पाठ, पूजा पीठिका, शांतिपाठ आदि बहुत सारी चीजें याद हैं। आर्जव ने कोरोना काल में अनेक बाल शिविरों में ऑनलाईन शिविरों में उत्साहपूर्वक सहभागिता की और अनेक पुरस्कार प्राप्त किये। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित बाल शिविर के 13000 विद्यार्थियों में आर्जव को सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। आर्जव के जन्म से कंदमूल, रात्रिभोजन का त्याग है। आर्जव अभिनय कला में भी पारंगत हो रहा है। उसके अनेक वीडियो सोशल मीडिया पर उपलब्ध हैं। आर्जव ने मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन, 5 पाप, 4 कषाय, शिविरों का उद्देश्य आदि विषयों पर और अनेक महापुरुषों के जीवन की घटनाओं पर अभिनयपूर्वक वीडियो बनाये हैं।

बहु प्रतिभाशाली आर्जव के इस उत्थान उसके पिता श्री चिन्तामण शास्त्री और आर्जव की माता का विशेष योगदान है। चहकती चेतना परिवार आर्जव का अभिनंदन करते हुये उसके यशस्वी जीवन की मंगल कामना करता है।

युक्ति हितेश जैन, वसई,थाणे महा.

कभी कभी जो बातें शब्दों से नहीं कहीं जातीं उन बातों को पेन्टिंग अपनी मौन भाषा में कह जाती है। मुम्बई के नजदीक वसई में रहने वाली 13 वर्ष की युक्ति जैन अपने भावों को अपने ब्रश से कहने में माहिर हो रही है। धार्मिक परिवार में पली युक्ति छोटी उम्र से ही ब्रश और रंगों से खेलने लगी थी और परिवार के प्रोत्साहन ने उसकी कला को नया रास्ता दिया और वह अब अपने भावों को पेन्टिंग के माध्यम से कह देती है। उसे पेन्टिंग में अनेक पुरस्कार भी मिल चुके हैं। पेन्टिंग के साथ युक्ति पढ़ाई में भी होशियार है साथ ही जैन धर्म के आधार नियम रात्रि भोजन का त्याग, जमीकंद सेवन का त्याग, पाठशाला में अध्ययन जैसे विशेष गुणों का पालन करती है। युक्ति अपनी कला के माध्यम से अपने लक्ष्य को प्राप्त करे - चहकती चेतना परिवार की मंगल कामना।

अर्हम प्रवीण जैन बांसवाड़ा (राज.)

पिता झलक ज्यों पुत्र में दिखती - पिता विद्वान तो बेटा भी कम नहीं। आचार्य अकलंक देव न्याय महाविद्यालय, ध्रवधाम बांसवाड़ा के प्राचार्य डॉ. प्रवीण शास्त्री के 9 वर्षीय पुत्र अर्हम जैन भी अपने पिता के पद चिन्हों पर है। डॉ. प्रवीण शास्त्री जैन दर्शन के अच्छे अध्येता और प्रवचनकार हैं। अर्हम भी अपने पारिवारिक आध्यात्मिक संस्कारों में आगे बढ़ते हुये विद्वान बनने का संकल्प कर चुका है। इस छोटी सी उम्र में अर्हम प्रवचन कला में कुशल हो रहा है। अर्हम ने जैन दर्शन के महत्वपूर्ण विषयों गुणस्थान, पूजा-विधि-फल, अहिंसा, सप्त व्यसन, तीन लोक, चार अनुयोग, सात तत्व सम्बन्धी भूल आदि विषयों पर 20 मिनिट से 30 मिनिट के बिना देखे व्याख्यान कर चुका है। ये सभी व्याख्यान अर्हमसिद्धम जैन नाम के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध हैं। प्रवचन की कला के साथ अर्हम जैन आचरण का पूरा पालन करता है। प्रतिदिन जिनेन्द्र दर्शन का नियम है।

इस छोटी सी उम्र में अर्हम की प्रतिभा देखकर यही प्रतीत होता है कि अर्हम जैन दर्शन का निष्णात विद्वान अवश्य बनेगा। चहकती चेतना परिवार की ओर से मांगलिक शुभकामनायें।

मार्मिक और अंतरा–श्री गणतंत्र शास्त्री जैन आगरा

अगर लगन हो दिल में सच्ची हर काम सरल हो जाता है - इस सुन्दर प्रेरणादायी पंक्ति को सार्थक कर दिखाया है आगरा के दो बच्चों 7 वर्ष के मार्मिक और 5 वर्ष की अन्तरा ने। इन दोनों ने आचार्य कुन्दकुन्द देव रचित समयसार ग्रन्थ की मूल प्राकृत भाषा की गाथायें याद कीं हैं। वो भी एक दो नहीं 80 से अधिक गाथायें। जिस भाषा को बड़े भी पढ़ नहीं सकते या पढ़ने में कठिनता अनुभव करते हैं उन्हीं प्राकृत गाथाओं को याद कर दिखाया है इन दोनों बच्चों ने। साथ ही तत्वार्थ सूत्र का प्रथम अध्याय, अनेक स्तुतियाँ याद हैं। बचपन से धार्मिक परिवेश में रहे दोनों बच्चे जिनेन्द्र दर्शन, जमीकंद त्याग, रात्रिभोजन त्याग, अभक्ष्य त्याग आदि नियमों का प्रसन्नता से पालन करते हैं। इनके पिता श्री गणतंत्र शास्त्री विद्वान और प्रसिद्ध कवि हैं और अनेक माध्यमों से धर्म प्रचार करते रहते हैं।

चहकती चेतना परिवार की ओर से दोनों होनहार बच्चों के उत्तम जीवन की मंगल कामना करता है।

जन्म दिवस की शुभकामनायें

जिनधर्म की प्यारी बेटी, करना आतम ज्ञान।
सीता, अंजना सा धैर्य हो, बनो सिद्ध भगवान।।

- एषणा ज्ञाता सिंघई, सिवनी - 24 सितम्बर

॥राम कथा॥ के रहस्य

पूरे देश में हिन्दू समाज के साथ अनेक जाति वर्गों की भगवान राम और उनकी कथा पर बहुत आस्था है। राम कथा की अनेक पात्र और उनकी घटनायें करोड़ों लोगों को याद हैं। परन्तु उसके विशिष्ट प्रयोग और उनके अलंकारों को न समझ पाने के कारण अनेक मिथ्या मान्यतायें और कल्पनायें स्थापित हो जातीं हैं। डॉ. वीरसागर जी के एक लेख में इन मान्यताओं को रामायण के अनेक ग्रन्थों के आधार से उसका सही स्वरूप बताया गया है -

1. **रावण के 10 सिर थे -** प्रचलित कथा के आधार पर रावण को दस सिर वाला माना जाता है। रावण के वास्तव में दस सिर नहीं थे अपितु वह बहुत अभिमानी था या वह बहुत बुद्धिमान था इसलिये उसे दस सिर वाला कहा गया। दूसरे प्रमाण के अनुसार रावण के गले में दस मणियों वाला हार था जिसमें उसके दस मुख दिखाई देते थे, अतः उसे दस सिर वाला कहा गया।

2. **रावण राक्षस था -** प्रचलित मान्यता के अनुसार रावण राक्षस था, टीवी सीरियल में भी उसे क्रूर और भयानक दिखाया जाता है। रावण वास्तव में राक्षस नहीं था बल्कि उसके वंश का नाम राक्षस था इसलिये उसे संकेत में राक्षस कहा जाता था।

3. **हनुमान आदि बंदर थे -** हनुमान आदि वानर बंदर नहीं थे, मनुष्य भी थे, हनुमान तो बहुत सुन्दर थे, कामदेव भी थे किन्तु उनके वंश का नाम वानर था, उनकी ध्वजाओं में वानर का चिन्ह था इसलिये लोग उन्हें संकेत में वानर कहने लगे।

4. **हनुमान हवा में उड़ते थे -** राम कथा की अनेक प्रसंगों में हनुमान को हवा में उड़ने वाला बताया गया है इसलिये हनुमान को मारूति, पवनकुमार और पवनसुत भी कहा जाता है। वास्तव में हनुमान के पिता का नाम पवनंजय था इस आधार पर उन्हें उड़ने वाला मान लिया गया। हनुमान को बजरंगबली भी कहने का कारण यह है कि उनका शरीर व्रज के समान शक्तिशाली था।

5. **पहाड़ उठाकर लाना -** प्रचलित कथा के अनुसार लक्ष्मण के घायल होने पर हनुमान से एक विशेष औषधि लाने को कहा तो औषधि की समझ न होने वे पूरा पहाड़ ले आये। सच में बात यह है कि समय की कमी और परिस्थिति की गम्भीरता को देखते हुये पहाड़ पर उपलब्ध सभी प्रकार की वनस्पतियों को भारी मात्रा में ले आये तो लोगों ने कहा कि हनुमानजी पूरा पहाड़ ही उठा लाये। उसी प्रकार, जिस प्रकार हम कभी बहुत अधिक सब्जियाँ खरीदकर ले आते हैं तो घर वाले कहते हैं कि आज तो पूरी सब्जी मण्डी उठा लाये।

6. **शूपनखा की नाक काटना -** प्रचलित कथा के अनुसार जब शूपनखा ने राम को शादी का प्रस्ताव दिया तो लक्ष्मण ने शूपनखा की नाक काट ली। सच में उसकी नाक नहीं काटी गई। राम तो भारतीय संस्कृति के आदर्श और मर्यादा पुरुषोत्तम थे वे किसी की नाक नहीं काट सकते थे। असल में यह हुआ था कि शूपनखा को अपनी सुन्दरता पर बहुत घमण्ड था और वह अपनी सहेलियों से वादा करके राम-लक्ष्मण के पास गई थी कि मैं अपनी सुन्दरता से राम -लक्ष्मण को अपने वश में कर लूँगी, इसलिये उसने अनेक प्रकार से कोशिश कीं परन्तु सफल नहीं हो पाई और जब वापस अपनी सहेलियों के पास गई तो सहेलियों ने हंसी करते हुये कहा - कटवा ली न अपनी नाक और उसका नाम शूपनखा हो गया।

7. **पत्थर की शिला को स्त्री बनाना -** लोगों की मान्यता के अनुसार एक ऋषि के श्राप से एक लड़की अहिल्या पत्थर बन गई। वनवास के समय राम ने पैर के स्पर्श से वह पत्थर फिर से लड़की के रूप में वापस आ गई। राम ने सचमुच में किसी पत्थर की शिला को पैर लगाकर स्त्री नहीं बनाया था, अपितु वे गौतम ऋषि के आश्रम में पहुँचे, वहाँ उनकी पत्नी अहिल्या पहले हुई एक दुर्घटना के कारण ड्रिप्रेशन में चली गई थी। वह हमेशा उदास रहती थी, जीवन के कोई सुख-दुख उसे प्रभावित नहीं करते थे। वह मानो पत्थर की शिला के समान हो गई थी। आश्रम के लोगों ने अहिल्या को समझाने का बहुत प्रयास किया परन्तु वह ठीक नहीं हो रही थी। किन्तु जब राम ने उसे बहुत कुशलता से समझाया तो वह ड्रिप्रेशन से बाहर आ गई, वह नार्मल हो गई। इसी बात को लोगों ने कहा कि राम ने शिला (पत्थर) को स्त्री बना दिया।

8. **सीता का पृथ्वी में समाना -** प्रचलित कथा के अनुसार अग्निपरीक्षा के बाद राम ने सीता को घर चलने के लिये कहा तो सीता ने मना करते हुये पृथ्वी से अपने लिये स्थान देने का निवेदन किया और पृथ्वी फट गई और सीता उसमें समा गई। सच में जगत की स्वार्थवृत्ति से सीता को वैराग्य हो गया और सीता ने एक पृथ्वीमति नाम की महान आर्यिका के पास दीक्षा का निवेदन किया और उनसे आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर ली थी और स्वयं को पूरी तरह उनके पास आत्म आराधना के लिये समर्पित कर दिया। अतः लोगों ने कहा कि सीता पृथ्वी में समा गई।

इस लेख से स्पष्ट होता है कि किसी भी पौराणिक घटना या पात्र के सम्बन्ध में मान्यता बनाने के पहले उसकी सच्चाई अवश्य समझना चाहिये।

आधार - रामकथा के रहस्य
साभार - **डॉ.वीरसागर जी जैन,** दिल्ली

हमारा गौरवशाली इतिहास

प्राचीनकाल से जैन धर्म का समृद्धशाली इतिहास रहा है। आध्यात्मिक और साहित्यिक रूप से समृद्धता के साथ पुरातात्विक दृष्टि से जैन धर्म का विपुल वैभव मिलता है। आज से लगभग 1200 वर्ष पूर्व आंध्रप्रदेश के चित्तूर जिले में तिरुमला पर्वत पर एक भव्य जैन मंदिर हुआ करता था। आठवीं सदी से ही जैन सभ्यता के मंदिरों को हिन्दू मंदिरों में परिवर्तित किया जाने लगा। इस दौरान लगभग 1000 जैन मंदिरों को परिवर्तित किया गया। दिगम्बर प्रतिमाओं की मूल पहचान छिपाने के लिये उन्हें वस्त्र और आभूषण पहनाये जाने लगे। तिरुमलै के प्रमुख मंदिर की मूल प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की है। इस बात को कई ब्राह्मण भी स्वीकार करते हैं और पुरातत्व विभाग के अधिकारियों, वैज्ञानिकों और ईमानदार इतिहासकारों ने भी यह माना है कि यह एक जैन मंदिर है।

पुरातत्व विभाग के वरिष्ठ निदेशक डॉ. संथालिंगम और एएसआई ने अपने अप्रकाशित शोध पत्रों में इन तथ्यों को स्पष्ट रूप से लिखा है कि दक्षिण भारत का हर पुराना मंदिर कभी जैन मंदिर था जिसे वर्तमान में विभिन्न प्रसिद्ध हिन्दू मंदिर के नामों से जाना जाता है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक कारणों से इन तथ्यों का प्रकाशन नहीं किया जा सकता। द्रविड़ के हजारों मंदिरों से कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो जैन मंदिर हिन्दू मंदिरों में परिवर्तित किये गये हैं -

1. मीनाक्षी मंदिर, मदुरै 2.कामाक्षी मंदिर, कांचीपुरम 3.वरापेरुमल मंदिर, कांचीपुरम 4.तिरुवनमलाई अरुणाचलम मंदिर 5. णायलापुर कपालीश्वर मंदिर 6.नागराज मंदिर, नागरकोईल 7. थिरुमाला बालाजी मंदिर,

डॉ. संथालिंगम ने यह भी कहा कि दक्षिण भारत के प्रसिद्ध कवि तिरुवल्लवर एक जैन संत थे जिन्होंने प्रसिद्ध क्लासिक थिरुकुरल काव्य लिखा है। वे कहते हैं कि तमिल भाषा द्रविड़ जैन ब्राह्मी भाषा से उत्पन्न हुई।

यह विशाल प्रतिमा केरल के कल्लिल जैन मंदिर की है। इसे आज से लगभग 1800 वर्ष बनाया गया था। यहाँ भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर की प्रतिमा हैं।

इसी तरह छत्तीसगढ़ के नगपुरा ग्राम जि. दुर्ग में जैन मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ को नागदेवता के रूप में पूजा जाता है। इस मंदिर को नागदेवता का मंदिर कहा जाता है।

कर्नाटक के गदग जिले का ऐतिहासिक गांव लक्कुंडी पहले कर्नाटक का महत्वपूर्ण शहर था। यहाँ पर स्थित एक जैन मंदिर को शिव मंदिर में बदल दिया गया। इस मंदिर को 11वीं शताब्दी में कर्नाटक के महान दानवीर श्राविका चिंतामणि अत्तिमब्बे ने इस गांव में 50 जिनमंदिर बनवाये थे। इनमें अधिकांश जिनमंदिर हिन्दू मंदिर में परिवर्तित कर दिये गये हैं और कुछ वीरान पड़े हैं। यहाँ एक जिनमंदिर को नागनाथ मंदिर कहा जाता है, यह मंदिर भगवान पार्श्वनाथ जिनालय था।

पाकिस्तान के प्रसिद्ध कटासराज में मंदिरों की श्रृंखला में 22, 23 और 26 नम्बर के मंदिर जैन मंदिर हैं। एक मंदिर के शिखर के बाहर पदमासन तीर्थंकर मूर्ति प्रतीत हो रही है। पास में ही तालाब के तट पर कुछ चरण चिन्ह स्थापित हैं जिन्हें लोग ब्रह्माजी कहते हैं।

पाकिस्तान के ही बशारत के पास स्थित प्रसिद्ध चेल अब्दल पहाड़ी पर प्राचीन प्रतिमायें और बलुआ पाषाण पर जैन चरण चिन्ह प्राप्त हुये हैं। पाकिस्तान की हजारा यूनिवर्सिटी के पुरातत्व विभाग के शोधकर्ता मुजफफर अहमद को यह अवशेष प्राप्त हुये थे। प्रसिद्ध चीनी बौद्ध भिक्षु ह्वेन सांग ने भी प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ कटास के पास जैन मंदिर होने का उल्लेख किया है। शोध के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कश्मीर, कैलाश आदि की ओर विहार करते हुये जैन मुनिराज यहाँ पधारे थे। वर्तमान में यह प्रतिमा और चरण चिन्ह लाहौर के म्यूजियम में रखे हुये हैं। हजारा यूनिवर्सिटी और तालीम स्कूल सिस्टम के शोधकर्ताओं ने चरणों को जैन चरण चिन्ह घोषित किया है।

ckt kj dk Hkk tu

u ckck u

आजकल होटल या बाजार का भोजन खाने का फैशन चल रहा है। हर सप्ताह के अंत में या किसी खास मौके पर होटल में खाना या बाजार से मंगवाकर खाने को स्टेण्डर्ड माने जाने लगा है। स्वाद और प्रदर्शन के समय में स्वास्थ्य की कोई परवाह नहीं होती और कई बार तो अस्पताल जाना पड़ता है या मौत तक हो जाती है। इस तरह की बातें कई बार पढ़ने सुनने के बाद भी दिल है कि मानता नहीं।

एक और घटना घटी गुजरात के अहमदाबाद में। साइंस सिटी रोड पर स्थित मैक्डॉनल्ड्स में दो दोस्त भार्गव जोशी और मेहुल हिंगु गये और उन्होंनं दो कोक का आर्डर दिया। भार्गव ने जैसे कोक में लगे स्ट्रा को हिलाया वैसे ही गिलास के नीचे से एक मरी हुई छिपकली ऊपर आ गई। इस घटना के बाद जमकर हंगामा हुआ और भार्गव की शिकायत पर नगर निगम के हेल्थ एंड फ्रूट विभाग ने कोल्ड ड्रिंक्स का सेम्पल लिया और रेस्टारेंट को सील कर दिया।

कचौड़ी में छिपकली

जयपुर के सोडाला प्रसिद्ध रावत मिष्ठान्न भंडार में एक व्यक्ति ने कचौड़ी में छिपकली निकलने शिकायत की। वैशाली नगर के अखिल अग्रवाल ने जैसे ही कचौड़ी ली और खाने लगे तो एक बाइट खाने के बाद जैसे ही दूसरा बाइट खाने लगे तो छिपकली का कटा हुआ हिस्सा नजर आने लगा।

बर्गर में निकला बिच्छू

करीब 9 माह पहले जयपुर के गौरव टॉवर स्थित मैकडोनल्ड के बर्गर में बिच्छु का टुकड़ा मिला। इसके बाद जब कस्टमर ने इसकी शिकायत वहाँ के मैनेजर से की तो उसे गलती मानने की बजाय बर्गर छीनकर फेंक दिया।

इसके पूर्व के अंकों में भी हम अनेक बार बाजार की वस्तुओं की गंदगी के बारे में प्रकाशित कर चुके हैं। अब निर्णय आपको करना है कि आपको स्वास्थ्य पसंद है या स्वाद ...?

पहले काम कौनसा

जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र में लावती देश की महापुण्रीकिणी नगरी में राजा वज्रदन्त राज्य करता था। उसकी रानी का नाम लक्ष्मीमती थाा राजा वज्रदन्त धर्म में रुचिवान था। एक दिन उसे एक साथ दो समाचार प्राप्त हुये। पहला उसके गुरु श्री यशोधर महाराज को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी दूसरा उसकी आयुधशाला में चक्ररत्न उत्पन्न हुआ था। इस चक्ररत्न के माध्यम से राजा वज्रदन्त छःखण्डों पर विजय प्राप्त कर चक्रवर्ती की उपाधि प्राप्त करता है।

राजा विचार करने लगा कि महापुण्य से दो उत्तम समाचार प्राप्त हुये हैं। मैं पहले चक्ररत्न प्राप्त करके दिग्विजय करने जाऊँ या अपने गुरु के केवलज्ञान प्रगट होने पर पूजा करने जाऊँ। बहुत विचार करने के बाद राजा ने निर्णय किया कि मैं केवलज्ञानी यशोधर भगवान की पूजा करने जाऊँगा।

और वह अपने परिवार के साथ सर्वप्रथम भगवान यशोधर के समवशरण में गया और अत्यंत भक्ति भाव से भगवान की पूजा की।

हम छोटे बड़े काम के लिये सबसे पहले मंदिर छोड़ देते हैं। समय नहीं मिला, जरूरी काम था, घर में शादी थी आदि कामों के बहाने से जिनमंदिर को छोड़ देते हैं। अरे भाई जिस अर्हन्त पूजा से पुण्य प्राप्त होता है और जिनके दर्शन कर पूर्ण सुखी होने का मार्ग मिलता है, षट आवश्यकों में पहला आवश्यक है ऐसा अर्हन्त पूजा का कार्य सबसे पहले करना चाहिये।

आचार्य जिनसेन स्वामी आदिपुराण में कहते हैं -

यतो दूरात समासन्नम् कार्यं कार्यं मनीषिभि।
व्यातिपाति ततस्तस्मात प्रधान कार्यमाचरेत् ।।

बुद्धिमान पुरुषों को दूरवर्ती कार्य की अपेक्षा निकटवर्ती कार्य पहले ही करना चाहिये, उसके बाद दूरवर्ती मुख्य कार्य करना चाहिये। 106।।

आरोही दीपक जैन सूरत

हवा से बातें करती है आरोही। साढ़े तीन साल उम्र से स्केटिंग कर रही मात्र 10 वर्ष की आरोही कमाल की प्रतिभाशाली बच्ची है। इस छोटी सी उम्र में आरोही स्केटिंग में चैम्पियन बन गई है। सूरत की रहने वाली आरोही ने अभी तक राष्ट्रीय स्तर अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लिया है और उसे अब तक 24 गोल्ड मेडल, 9 सिल्वर मेडल और 6 ब्रांज मेडल जीत चुकी है। आरोही गुजरात राज्य की टीम के सदस्य के रूप में भी प्रतियोगिताओं में सहभागिता की है। वह तीन बार राज्य स्तर पर टॉपर रही है। आरोही लौकिक क्षेत्र की तरह जिनधर्म के पालन में श्रेष्ठ रहे - चहकती चेतना परिवार की मंगल कामना।

चहकती चेतना

प्रश्न आपके समाधान जिनवाणी के

1. **शंका -** केश लोंच को परिषह में क्यों नहीं गिनाया ?
   समाधान - केश को कटवाने से दुःख नहीं होता इसलिये केश लोंच परिषह में नहीं गिनाया। -जिनेश कुमार जैन, वर्धा
2. **शंका -** जब रात्रि में पूजन करना मना है तो विवाह समारोह में रात्रि में पूजन क्यों की जाती है ?
   समाधान - विवाह कार्य दिन में ही करना चाहिये। रात्रि में विवाह पूजन विधि करना धर्म विरुद्ध कार्य है। - प्रमोद कुमार जैन, पनागर
3. **शंका -** वीतरागी मंदिर में कीमती वस्तुओं की क्या आवश्यकता है ?
   समाधान - आजकल जिनमंदिरों में भक्ति की जगह आडम्बर मुख्य होने लगा है। प्राचीन मंदिरों में छत्र भामण्डल आदि पत्थर के ही होते थे। जिनमंदिरों में कीमती समान रखना चोरों को निमंत्रण देना है। - नीरज कुमार जैन, पन्ना
4. **शंका -** क्या फल को काटने से वह अचित्त जीव रहित हो जाता है ?
   समाधान - फल को काटकर नमक आदि मिलाने से अचित्त हो जाता है। - मिली जैन, कटनी
5. **शंका -** जहाँ दिगम्बर मंदिर न हो तो क्या वहाँ श्वेताम्बर प्रतिमा या चंदन लगी प्रतिमा के दर्शन कर सकते हैं या नहीं ?
   समाधान - निर्ग्रन्थ और निर्लेप प्रतिमा ही वंदनीय है, परिग्रह सहित प्रतिमा वंदनीय नहीं है। - आभा जैन, पाली
6. **शंका -** ऋषभनाथ तो प्रथम तीर्थंकर थे तो उन्होंने सर्वप्रथम किसे वंदन किया था ?
   समाधान - ऋषभनाथ ने सर्वप्रथम सिद्ध भगवान को नमस्कार किया था। - मणिलाल जैन, भरतपुर
7. **शंका -** क्या क्षुल्लक, आर्यिका के चरण स्थापित किये जा सकते हैं ?
   समाधान - नहीं। यह आगम सम्मत नहीं है। - मीरा जैन, अजमेर
8. **शंका -** क्या किसी मंदिर की छाया मकान पर अशुभ माना जाता है ?
   समाधान - किसी जिनागम में इसका उल्लेख नहीं है, यह मन से बनाई हुई बातें हैं। - एम.एल.जैन, किशनगंज

शुद्ध देशी घी 23/- रु. किलो

यह हेडिंग पढ़कर आप निश्चित चौंक गये होंगे। बात है ही आश्चर्य की, जहाँ बाजार में शुद्ध देसी घी 700 - 800 रु. किलो मिलता है वहीं 23 रुपये का एक किलो घी कहाँ और कैसे मिलने लगा जी हाँ यह सच है। चमड़ा सिटी के नाम से मशहूर प्रसिद्ध सिटी कानपुर में जाजमऊ से गंगा नदी के किनारे 10 से 12 किमी के एरिया में आप घूमने जायें तो तो आपको नाक बंद करना पड़ेगी। यहाँ सैकड़ों की संख्या में गंगा के किनारे भट्टियाँ जलतीं हुईं मिल जायेंगी। इन भट्टियों में जानवरों की चर्बी को गलाया जाता है। इस चर्बी से मुख्यतः 3 वस्तुयें बनतीं हैं -

1. एनीमल पेंट जिसे हम अपने घरों की दीवारों पर लगाते हैं।

2. ग्लू फेविकॉल - जिसे हम कागज, लकड़ी, प्लास्टिक आदि जोड़ने का काम किया जाता है।

3. सबसे महत्वपूर्ण है देसी घी।

जीहाँ यही शुद्ध कहा जाने वाला देसी घी यहाँ की थोक मण्डियों 120 रु. से 150 रु. किलो तक खुलेआम मिलता है। इसे बोलचाल की भाषा में पूजा वाला घी भी कहा जाता है। इसका सबसे ज्यादा प्रयोग भण्डारा कराने वाले भक्तजन ही करते हैं। कई लोग इसी 15 किलो घी का डिब्बा लेकर भण्डारे में प्रयोग करते हैं और पुण्य कमाने का रास्ता ढूंढते हैं।

इस नकली शुद्ध देसी घी का पहचान करना भी बहुत मुश्किल है। दिल्ली एन.सी.आर.में भैंस के दूध से बना नाम से बिकने वाला यह शुद्ध देसी घी के बढ़िया रवेदार दिखता है, यह चर्बी वाला घी देखने पर बिल्कुल भी महसूस नहीं होता कि यह नकली है। नकली घी यह कार्य विगत 20-25 साल से चल रहा है। औद्योगिक क्षेत्र में फैली हुईं वनस्पति घी की फैक्ट्रियाँ यह नकली घी भारी मात्रा में खरीदती हैं। गांवों और छोटे कस्बों-शहरों के लोग इसी वनस्पति घी से बने लड्डू विवाह-शादियों में बहुत मजे से खाते हैं। जिन शादियों में भोजन प्लेट के हिसाब से ड्ब्बे से दिये जाते हैं उन शादियों में, होटलों में यही चर्बी वाला घी उपयोग किया किया जाता है। अपने को शाकाहारी समझने वाले हिन्दू और अनेक जैन साधर्मी भी यही मांस वाला घी शौक से खा रहे हैं। हो सकता है जो दाल-सब्जी आप बड़े शौक से खा रहे हैं वह किसी गाय-भैंस-सुअर की चर्बी से बने घी के बनाई गई हो।

लगभग 2 वर्ष पूर्व इंदौर के नजदीक कुछ स्थानों पर नकली घी बनाने की फैक्ट्री पकड़ी गईं थीं। इन फैक्ट्रियों के साथ फॉर्म हाउस पर सैकड़ों सुअर पाले जा रहे थे। जिनको मारकर उनकी चर्बी से घी बनाया जाता था और इस नकली घी इंदौर की अनेक होटलों में 200-250 रुपये किलो में बेचा जाता था। इसलिये आप सावधान हो जाईये और आज ही होटलों और भोजन कॉन्ट्रेक्ट वाली शादियों के भोजन से दूर हो जाईये और अगर अपनी जीभ और मन पर कंट्रोल नहीं होता तो अपने को शाकाहारी कहना बंद कर दीजिये।

अशोक स्तंभ का सच

13 जुलाई 2022 को देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नये संसद के परिसर में भारत के राष्ट्रीय चिन्ह तीन शेर के प्रतीक का अनावरण किया। देश में इस अनावरण के बाद विवाद भी होने लगा कि शेर तीन नहीं हैं चार हैं।

इसलिये इस स्तम्भ का इतिहास भी जानना आवश्यक है। जिस सारनाथ के स्तम्भ से इन शेरों के प्रतीक को लिया गया है दूसरे का पक्ष का सम्राट अशोक भारत के जैन शासक रहे हैं। सम्राट अशोक ने अपनी बौद्ध रानी तिष्यरक्षिता के कारण जैनधर्म को त्यागकर बौद्धधर्म अपना लिया था लेकिन तिष्यरक्षिता ने ही सम्राट अशोक के पुत्र कुणाल को कपट से अंधा बनवा दिया था, वास्तव में जब अशोक ने अपने प्रिय पुत्र कुणाल को उज्जैन अध्ययन के लिये भेजा तो उसने आदेश लिखा - ''अधीयताम कुमारं'' (राजकुमार को पढ़ाओ) लेकिन रानी तिष्यरक्षिताने इस संदेश में मात्र एक बिन्दु जोड़ दिया अब संदेश हो गया - ''अंधीयताम कुमारं'' जिससे इस संदेश का अर्थ ही बदल गया - राजकुमार को अंधा करो। इस संदेश का पालन करते हुये कुणाल ने इसे पिता का आदेश समझा और स्वयं अंधे हो गये। इस कारण दूसरे पुत्र दशरथ (पुण्यरथ) को राज्य मिला। तिष्यरक्षिता का यह सच जानने पर अशोक ने जीवन के अंतिम चार वर्ष पहले बौद्धधर्म को त्यागकर फिर से जैन धर्म अपना लिया। इस बात का प्रमाण कवि बिल्हण की रचना राजतरंगिणी में भी मिलता है। अशोक ने सभी बौद्ध भिक्षुओं को आधा नींबू भेजकर कहा कि तुम्हारे पास आधा ही ज्ञान है, पूर्ण ज्ञान तो जैन धर्म में है फिर अशोक ने अपने पुत्र कुणाल के पुत्र संप्रति संपदी को उज्जैन का राजा घोषित कर आधे भारत का राज्य दे दिया था। शेष आधे राज्य पर दूसरे पुत्र पुण्यरथ का राज्य था। राजा संप्रति ने पूर भारत में सवा लाख जैन मंदिर निर्मित करवाये थे।

ऐसा भी कहा जाता है कि कलिंग के युद्ध में लाखों मरे हुये सैनिकों को देखकर अशोक बौद्ध धर्म अपनाकर अहिंसक हो गया था - ये सब मन से बनाई हुईं बातें हैं। वास्तव में कलिंग के युद्ध से दो साल पहले ही अशोक बौद्ध धर्म अपना चुके थे और बौद्ध भिक्षुओं की शिकायत पर अशोक ने 12000 जैन साधुओं की हत्या करवा दी थी। जैन साधुओं की हत्या के आदेश में तिष्यरक्षिता कोई षडयंत्र भी हो सकता है। बौद्ध ग्रन्थ दिव्यावदान में इस घटना का उल्लेख किया गया है। लेकिन इतिहास में ये सभी बातें छुपाईं गईं। सारनाथ में मिले अशोक स्तंभ को भी बौद्ध प्रतीक का नाम दे दिया गया लेकिन वास्तव में सारनाथ जैन धर्म में एक महत्वपूर्ण तीर्थ है। जैन धर्म

में सारनाथ 11वें श्रेयांसनाथ भगवान की जन्मभूमि है। सारनाथ का वास्तविक नाम सिंहपुरी है लेकिन श्रेयांसनाथ नाम का अपभ्रंश भाषा में परिवर्तित होकर सारनाथ हो गया है।

बौद्ध धर्म में ऐसा माना गया है कि गौतम बुद्ध ने पहला उपदेश यहाँ पर ही दिया था परन्तु ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता। अशोक के शासन में बौद्ध सभा भी पाटलीपुत्र में हुई थी जिसमें अभिधम्म पिटक की रचना हुई थी।

सारनाथ स्तंभ के अशोक चक्र में 24 तीलियाँ या 24 खण्ड 24 तीर्थंकरों की प्रतीक हैं, इन्हें 24 घंटे का प्रतीक मानना सही नहीं है क्योंकि अशोक के समय समय की गणना घंटों के हिसाब से नहीं लेकिन प्रहर और मुहूर्त के हिसाब से की जाती थी। यदि अशोक चक्र बौद्ध धर्म से सम्बन्धित होता तो उसमें 24 नहीं, 8 खण्ड / तीलियाँ होतीं। देश की आजादी के बाद तिरंगे में अशोक चक्र निर्धारित किया गया जो वास्तव में सम्राट अशोक के दादा चन्द्रगुप्त मौर्य समग्र राष्ट्र पर अहिंसा का प्रसार करते थे, तब उन्होंने यह अहिंसा चक्र निर्मित कराया था। यह स्तम्भ आज भी सारनाथ में विशाल जैन मंदिर के बाजू में स्थापित पुरातत्व विभाग के भण्डार में रखा हुआ है। अनेक पुरातत्व के जानकारों, इतिहासकारों व विद्वानों ने यह माना है कि इस स्तम्भ का निर्माण और प्रचलन चंद्रगुप्त मौर्य ने किया था।

भारत के राष्ट्रीय चिन्ह अशोक चक्र के सिंह भगवान महावीर के चिन्ह शेर का प्रतीक का है। पहले भारतीय सिक्कों और रुपये पर चार सिंह वाले राष्ट्रीय चिन्ह को छापा जाता था। भारतीय के राष्ट्रीय चिन्ह पर शेर के नीचे भगवान ऋषभदेव का चिन्ह बैल, भगवान अजितनाथ का चिन्ह हाथी, भगवान संभवनाथ का चिन्ह घोड़ा और भगवान महावीर का चिन्ह शेर है। इसलिये हमें गर्व होना चाहिये कि भारत का राष्ट्रीय चिन्ह जैन धर्म का प्रतीक है।

वेदिका रजनीश जैन भोपाल

12 वर्षीय वेदिका जैन बहुत प्रतिभाशाली बालिका है। मात्र 12 वर्ष की उम्र की वेदिका ने मध्यप्रदेश राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस सफलता पर मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल ने वेदिका को राजभवन में पुरस्कार देकर सन्मानित किया। वेदिका के सुखद जीवन की शुभकामनायें।

अब नहीं छोड़ूँगा

बेटे! कोचिंग जा रहे हो

हाँ मम्मी!

तो कमरे की लाइट बंद करके जाना और हाँ! बाथरूम का नल अच्छे से बंद कर देना। कल तुम नल खुला छोड़ गये थे तो पूरा दिन पानी बहता रहा और जब पानी की टंकी खाली हो गई।

अरे मम्मी! आप भी न.... बहुत टोकती हो। क्या हुआ जो लाईट जली रह गई तो? क्या लाइट के बिल के लिये पैसे कम पड़े गये हैं ?

मतलब बिना काम के लाईट की बरबादी और नल खुला छोड़ गये और पानी दिन भर बहता रहा उसका क्या...?

तो क्या हुआ मम्मी! घर में बोरिंग करा रखी है जब चाहो बटन चालू करो और पानी भर लो। आप भी न छोटी-छोटी सी बातों से परेशान रहती हो और सबको परेशान करती हो

वाह बेटा..! मनमरजी काम करने दो, टोको नहीं तो अच्छी और गलत बात पर टोक दिया तो परेशान करने लगी हूँ।

इसमें क्या गलत हो गया मम्मी.. थोड़ी लाईट जल गई और थोड़ा पानी बह गया और क्या ? वैसे भी आपके इतने नियम पालता हूँ ये मत खाओ, वो मत खाओ, बाजार में मत खाओ, पानी छानकर पियो बस हो गया न।

सबको अपनी ही चिन्ता है दूसरा मरे तो मरे उससे तुम्हें क्या ?

अब मैंने किसको मार डाला मम्मी! आप फालतू में ही परेशान हो रही हो।

बेटा! हमारा भाग्य अच्छा है जो हमें अच्छा घर, सारी सुविधायें, भोजन-पानी सब सुविधायें मिल रहीं हैं। कभी उनका सोचो जिनके घर नहीं, जिन्होंने अपने घर में लाईट नहीं देखी, पानी के कितना परेशान होना पड़ता है और

सबसे बड़ी बात जैन कुल मिला। जिसमें सत्य अहिंसा के संस्कार मिले और हम अपने सुख के लिये या आलसीपने के कारण हिंसा किये जा रहे हैं।

मम्मी! आप ही कहती हो न कि संसार में सब जीव अपने कर्मों का फल भोगते हैं तो जिनको ये सुविधायें नहीं मिलीं अपने देश में लाखों लोग हैं जिनके घर पानी नहीं आता, हजारों लोग गंदा पानी पीते हैं, आज भी हजारों लोग घर से दूर सिर पर पानी रखकर लेकर आते हैं..

तो क्या हुआ... उनका पाप का उदय है और हमें यह सब मिला तो हमारा पुण्य उदय। अब वे दुःखी हैं तो इसमें हमारा क्या दोष ... और मैंने हिंसा की यह बात आप कैसे कह सकती हो ? कम ऑन मम्मी ...आप भी न छोटी सी बात को बढ़ा रहीं हैं।

बात बढ़ाने की नहीं है बात सही और गलत की है और हाँ! तुम्हारी बात सही है कि उनके पाप का उदय है। पर जानते हो उनके पाप का उदय क्यों आया?

क्यों आया ?

पहले उन्होंने भी प्राप्त सुविधाओं का दुरुपयोग किया उसके कारण उन्हें पाप बंध हुआ और अब उसका फल भोग रहे हैं और तुम तो जानते हो कि लाईट बनने में कितने जीवों की हिंसा होती है।

हाँ मम्मी! 2 साल पहले जब हम डेम गये तो पता चला था कि लाईट के बनाने में लाखों पानी के जीव मर जाते हैं।

सब पता होने पर भी लापरवाही और पानी की बरबादी से पाप भी बंध होता है और जीव हिंसा भी। आवश्यकता हो तो लाईट-पानी का उपयोग समझ में आता है पर अनावश्यक बरबादी ठीक नहीं।

मम्मी! आप बात तो सही कह रहीं हैं...।

एक और बात। पानी या लाईट या किसी भी चीज का सीमित उपयोग देश की सेवा भी है। हर सेवा बार्डर पर जाकर नहीं होती कुछ सेवा ऐसे भी हो जाती है।

वौ कैसे ?

पानी और लाईट हर देश की बेसिक नीड्स (आवश्यकतायें) हैं। हम जितना आवश्यक उपयोग करेंगे उतना ही दूसरी जगह उसका उपयोग होगा।

बस मम्मी! समझ गया अब मैं आगे से ध्यान रखूँगा और लाईट बंद करके जाऊँगा और नल खुला नहीं छोड़ूँगा, साथ ही हर चीज का आवश्यकता के अनुसार ही उपयोग करुँगा और हाँ मम्मी! आपकी प्रेरणा तो मिली है पर मैं आपके डर से नहीं यह नियम के लिये नहीं बल्कि अपने सुन्दर भविष्य के लिये और हिंसा से बचने के लिये।

वाह बेटा! आज तुमने सुन्दर काम की प्रतिज्ञा ली है।

काशी जैन जर्मनी

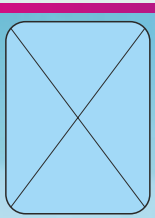

जिनधर्म की सुगंध देश में ही नहीं विदेश में फैल रही है। जर्मनी में रहने वाली श्री अर्पितकुमार जैन की 4 वर्ष की काशी धर्म में बहुत रुचिवान है। साथ ही वह नृत्य, आर्ट एंड क्राफ्ट में भी बहुत होशियार है। जिनधर्म और पाठशाला का वातावरण न होने पर भी जिनधर्म के प्रति रुचिवंत है। उसे णमोकार मंत्र के साथ चौबीस तीर्थंकर के नाम चिन्ह सहित और कुछ अर्घ्य भी याद हैं।

पौराणिक कहानी -

शील का चमत्कार

चम्पा नगरी में दन्तिवाहन राजा रहता था। उसमें रानी का नाम अभया था। उनके राज्य श्रेष्ठी का नाम वृषभदत्त था। श्रेष्ठी का एक ग्वाला **(Shepherd)** था जिसका नाम सुभग था। एक दिन सुभग लौट रहा था। सर्दी के दिन थे, उसे जंगल में एक ध्यान में लीन मुनिराज दिखाई दिये। ग्वाला दिगम्बर मुनिराज के स्वरूप से अनजान था। उसे मुनिराज पर बहुत दया आई और वह सोचने लगा - चेहरे से कोई महात्मा लगते हैं, इतना शांत चेहरा, जैसे कोई बाहर से कोई मतलब ही नहीं। बेचारे... इतनी भयंकर ठंड में नग्न बैठे हैं, इन्हें कितनी ठंड लग रही होगी, कहीं ये बीमार न हो जायें। यह सब सोचकर उन्हें महान पुरुष समझकर वह ग्वाला सुभग पूरी रात मुनिराज के पास बैठा रहा और उनकी सेवा करता रहा। प्रातःकाल होने पर मुनिराज ने आंखें खोलीं और सुभग को आशीर्वाद दिया और कहा - हे भव्य! मैं तुम्हें णमोकार मंत्र देता हूँ। इसे सदा याद रखना, तुम्हारा कल्याण होगा।

सुभग हर कार्य के पहले णमोकार मंत्र बोलने लगा, उसे णमोकार मंत्र पर बहुत श्रद्धा हो गई। एक दिन वह नदी में तैर रहा था तो पानी के अंदर एक नुकीली लकड़ी उसके पेट में घुस गई और वह मर गया। मरते समय वह मन में णमोकार मंत्र का स्मरण कर रहा था। वह ग्वाला मरकर अपने ही सेठ के घर उसका पुत्र हुआ। उसका नाम सुदर्शन रखा गया। जैसा उसका नाम वैसा उसका रूप। सुन्दरता ऐसी कि जो देखे तो देखता रह जाये।

एक दिन रानी अभया ने उसे देख लिया और देखते ही उस मोहित गई। सेठ सुदर्शन पूर्व भव के संस्कारों से हर अष्टमी और चतुर्दशी को रात्रि मे श्मशान में जाकर ध्यान लगाया करते थे। रानी ने अपनी विश्वासपात्र दासी को अपने मन की बात बताई। दासी बोली - महारानीजी! आप चिन्ता न करें। मैं सुदर्शन सेठ को किसी ने किसी तरह आपके पास ले आऊँगी और वह दासी श्मशान से ध्यान करते हुये सुदर्शन सेठ को उठवाकर ले आई। विषय वासना में अंधी महारानी अभया ने सुदर्शन सेठ के सामने अनेक प्रकार से उन्हें

वश में करने का प्रयास किया परन्तु वह उसके बहकावे में नहीं आये। जब रानी सुदर्शन के शील की दृढ़ता के सामने हार गई तो उसने अपने कपड़े फाड़ लिये, नाखूनों से अपने शरीर पर घाव कर लिये, बाल बिखेर लिये और शोर मचाने लगी - यह दुष्ट व्यक्ति मेरे कमरे में मेरा शील भंग करने आया है। मुझे बचाओ, पकड़ो इसे।

रानी की चीख सुनकर सिपाही दौड़े आये और सुदर्शन को पकड़कर बांध दिया और राजा के सामने ले गये। जब राजा को पूरी कहानी पता चली तो उसे बड़ा क्रोध आया और सुदर्शन से सच्चाई पूछी परन्तु सुदर्शन मौन रहे। राजा ने सुदर्शन के मौन को उसका अपराध करना मान लिया और सेठ सुदर्शन को मृत्युदण्ड दे दिया। सिपाही सुदर्शन को लेकर श्मशान पहुँचे और उन्हें मारने की तैयारी की। जैसे ही चाण्डाल ने अपनी तलवार सुदर्शन सेठ के ऊपर चलाई वैसे ही एक आश्चर्य हुआ और वह तलवार फूलों की माला बन गई। देवों ने शील गुण के धारी सुदर्शन की रक्षा की। देवगण सुदर्शन सेङ्ग की जय जयकार करने लगे। सिपाहियों ने भागकर यह आश्चर्यकारी समाचार राजा को सुनाया तब राजा दौड़ता हुआ सुदर्शन सेठ के पास पहुँचा और उनसे अपने अपराध की क्षमा मांगी।

सुदर्शन ने कहा कि राजन! इसमे आपका कोई दोष नहीं है। यह मेरे द्वारा ही किये गये कर्मों का उदय है। उन्हें संसार से वैराग्य हो गया और उन्होंने मुनि विमलवाहन से मुनिदीक्षा ले ली और तप करने लगे। अन्त में समस्त कर्मों का नाशकर पाटलिपुत्र (पटना) से निर्वाण पद की प्राप्ति की।

सार-समाचार

रतलाम -

रतलाम में 19 और 20 मई को जिनमंदिर शिलान्यास का कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में नगर के समीप की नसियाजी में अजमेरा परिवार द्वारा समयसारः कहान शताब्दी कीर्ति स्तम्भ की स्थापना की गई।

जबलपुर

27 जून को जबलपुर के जैन युवा फैडरेशन द्वारा उपनगर करमेता में नवनिर्मित जिनमंदिर में अस्थायी वेदी पर जिनेन्द्र भगवान यागमण्डल विधान और वेदी शुद्धि पूर्वक विराजमान हुये। इस अवसर जिनमंदिर में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर एवं ब्र.विमलाबेन जयपुर के सान्निध्य में श्रीमति अनीताजी श्री अजितकुमारजी श्रीमति शुभांगी अनिकेत, अविराज जैन महारानी फैशन परिवार और श्री दिलीपजी जैन करेली द्वारा समयसारः कहान शताब्दी कीर्ति स्तम्भ की स्थापना की गई।

नागपुर

दिनांक 17 और 18 जून को समयसारः कहान शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत चलाये जा रहे समयसार रथ का नागपुर के श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल और जैनयुवा फैडरेशन द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर भव्य शोभायात्रा नागपुर के प्रमुख मंदिरों से होती हुई श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर एम्प्रेस सिटी पहुँची। नागपुर मण्डल के सदस्यों द्वारा इसका अभूतपूर्व आयोजन किया गया।

देवलाली -

देवलाली में दिनांक 15 मई से 2 जून पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा आध्यात्मिक शिक्षण -प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मध्य में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित भरत का अर्न्तद्वन्द नाटक का प्रभावशाली मंचन हुआ। 22 मई को श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का सार्वजनिक अभिनंदन किया गया। साथ ही डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के कर कमलों से समयसारः कहान शताब्दी कीर्ति स्तम्भ का अनावरण किया गया। इस स्तम्भ के भेंटकर्ता और विराजमानकर्ता श्रीमति मीनाक्षी बेन नवीनभाई केशवलाल मेहता मुम्बई और श्रीमति जवेर बेन मणिभाई कारिया परिवार, मुम्बई हैं।

सम्मेदशिखर में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

सम्मेदशिखर में श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनमंदिर की छत पर दिनांक 2 जुलाई से 4 जुलाई 2022 नवीन वेदी पर 21 जिनबिम्बों की पुर्नस्थापना विधि पूर्वक की गई। इस अवसर पर श्री सम्मेदशिखर मण्डल विधान एवं याग मण्डल विधान संपन्न हुआ। फिर वेदी शुद्धि पूर्वक जिनबिम्बों की स्थापना की गई। इस अवसर पर पण्डित प्रकाशभाई शाह, कोलकाता, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर का लाभ प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विधि पण्डित रजनीभाई दोशी के निर्देशन में श्री विराग शास्त्री जबलपुर, डॉ. मनोजकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित अशोक जैन उज्जैन के सहयोग से संपन्न कराई गई। कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री चम्पालाल भबूतमल भण्डारी, बैंगलोर के द्वारा किया गया।

ग्वालियर में गुरुवाणी मंथन शिविर संपन्न

ग्वालियर के नाहरखाना स्थित श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन में 22 जून से 26 जून तक गुरुवाणी मंथन शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के तीनों समय पर व्याख्यानों के साथ श्री विराग शास्त्री के व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के अंतिम दिन उच्च पदों के लिये तैयारी और मार्गदर्शन करने वाली संस्था प्रयास के ग्वालियर केन्द्र का शुभारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम की सम्पूर्ण संयोजन श्री मनोज जैन और श्री मनीष जैन द्वारा किया गया।

सोनागिर में षटखण्डागम सत्प्ररूपणा विधान एवं वाचना संपन्न

जैनिज्म थिंकर संस्थान और अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन, दिल्ली के द्वारा सिद्धक्षेत्र सोनागिर के कुन्दकुन्द नगर एवं विशाल धर्मशाला में षटखण्डागम सत्प्ररूपणा विधान और आध्यात्मिक शिविर संपन्न हुआ। 1 जून से 8 जून तक आयोजित इस शिविर में डॉ. राकेशजी नागपुर, पण्डित जे.पी.दोशी मुम्बई, ब्र. विमलाबेन जयपुर, डॉ. दीपकजी जयपुर, पं. संयम शास्त्री नागपुर आदि देश के अनेक विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विधान जिनदेशना टीम के संयोजन में पण्डित अनिलजी धवल और पण्डित दीपकजी धवल के विधानाचार्यत्व में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम के निर्देशक श्री विराग शास्त्री जबलपुर एवं प्रमुख संयोजक श्री नीरज जैन दिल्ली थे।

सहयोग प्राप्त

5000/- **श्रीमति ताराबाई कोमलचंदजी जैन**, जबलपुर
1100/- **क्रीमसी मेहता**, अहमदाबाद
1100/- गुप्त दान - **शास्त्री परिवार**, इंदौर
11000/- **कु. देशना अतीत भाई शाह**, तलौद - प्रतिभा विशेषांक
11000/- हस्ति - **रिया सुपुत्री श्री नयन शाह**, हैदराबाद- प्रतिभा विशेषांक

देवलाली में 24वाँ बाल संस्कार शिविर संपन्न

पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के सुरम्य प्रांगण में 24वाँ बाल संस्कार शिविर संपन्न हुआ। दिनांक 5 मई से 10 मई तक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः योग और प्रार्थना, जिनेन्द्र पूजन, सामूहिक कक्षा, वर्गवार कक्षा, रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति गुरूदेवश्री का प्रवचन, संगीतमय पौराणिक कथा और सांस्कृतिक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम आयोजित किये गये। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री वीनूभाई शाह एवं श्री उल्लासभाई के संयोजन में सम्पन्न हुये। अगले वर्ष का 25वाँ बाल संस्कार शिविर रजत जयंती वर्ष के रूप में मनाया जायेगा। इस अवसर पर अनेक नये कार्यक्रमों के साथ नये विषयों का समाहित किया जायेगा।

भोपाल में 14वाँ बाल एवं युवा शिक्षण शिविर सम्पन्न

दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल भोपाल के द्वारा 22 मई से 29 मई तक शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन जिनेन्द्र अभिषेक-पूजन, धार्मिक कक्षायें और रात्रि को जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद वर्गवार कक्षायें आयोजित हुईं। इस शिविर में लगभग 250 बच्चों और 150 महिलाओं एवं युवाओं ने सहभागिता की। सम्पूर्ण कार्यक्रम दिगम्बर जैन स्कूल, चौक, भोपाल में आयोजित हुये।

चहकती चेतना / जिनदेशना के नवीन कार्यालय का उद्घाटन

बाल - युवा जगत की लोकप्रिय पत्रिका चहकती चेतना और सामाजिक संस्था जिनदेशना के कार्यालय का जबलपुर में उद्घाटन सम्पन्न हुआ। अष्टान्हिका महापर्व के अंतिम दिन 13 जुलाई को जबलपुर पधारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ. संजीव कुमारजी गोधा एवं श्रीमति संस्कृति संजीव गोधा, जयपुर के करकमलों से हुआ। उद्घाटन के पश्चात् अपने उद्बोधन में जिनदेशना के कार्यों की प्रशंसा की और चहकती चेतना को बाल युवा वर्ग की श्रेष्ठ पत्रिका बताया। कार्यक्रम के अंतिम में टीम जिनदेशना द्वारा डॉ. संजीवजी एवं संस्कृति गोधा का सन्मान किया गया। इस अवसर पर टीम जिदेशना के श्रीमति स्वस्ति जैन, आभास जैन, सोनू जैन सहित एवं अनेक स्वाध्याय प्रेमी साधर्मी उपस्थित थे।

जबलपुर में अष्टान्हिका महापर्व डॉ. संजीव जी गोधा के सान्निध्य संपन्न

आषाढ़ माह की अष्टान्हिका महापर्व पर दिनांक 6 जुलाई से 13 जुलाई तक श्री समयसार मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला संपन्न हुई। इस अवसर पर डॉ. संजीव कुमार गोधा के प्रातः समयसार पर एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर व्याख्यान संपन्न हुये। प्रातःकाल डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित समयसार मण्डल विधान की सम्पूर्ण विधि श्री विराग शास्त्री, श्री प्रशांत जैन, श्री राजीव जैन, श्री अजित जैन, मंगलार्थी अनुभव जैन के द्वारा संपन्न हुई।

कार्यक्रमों की झलकियां

सम्मेद शिखर में वेदी प्रतिष्ठा

देवलाली

सोनागिर

समयसार रथ प्रवर्तन नागपुर

षट्खंडागम शिविर सोनागिर

भोपाल

सोनागिर

सोनागिर

रतलाम

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट विलेपारला, मुम्बई द्वारा

ज्ञानोदय तीर्थधाम, भोपाल में आयोजित

आयु सीमा :
20 वर्ष से 45 वर्ष तक

19-21
शुक्रवार-रविवार
अगस्त 2022

निवेदक : श्री कुंदकुंद-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट
ज्ञानोदय तीर्थधाम, दीवानगंज, जि.रायसेन म.प्र.

मंगल सान्निध्य :
- डॉ. संजीवजी गोधा, जयपुर
- श्री विपिनजी शास्त्री, नागपुर
- श्री अभयजी शास्त्री, खैरागढ़

निर्देशक :
विराग शास्त्री, जबलपुर
9300642434

संपर्क सूत्र : श्री अमित 'अरिहंत' : 9588001360 | श्री ज्ञायक शास्त्री : 9867022484 | श्री आशीष शास्त्री : 8770487588 संपर्क समय : रात्रि 7बजे से 8बजे

अबकी बार चलो गिरनार

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि
30 जुलाई 2022

सिद्धों का संदेशा आ गया

सिद्धक्षेत्र गिरनार की तलहटी में

vk/ ;kfRed f'k{k.k f'kfoj
एवं
श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान

मंगलवार,
15 नवम्बर
से सोमवार, 21
नवम्बर 2022

विशेष आकर्षण :
- सिद्धक्षेत्र पर देश के उच्चकोटि के विद्वानों द्वारा जिनदेशना का प्रवाहन
- सिद्धों के गुणगान का मंगल अवसर ▪ देश भर के मुमुक्षुओं का मेला
- भगवान नेमिनाथ की निर्वाण भूमि के पावन दर्शन
- गिरनार एवं आसपास के तीर्थ क्षेत्रों की यात्रा का स्वर्णिम अवसर
- मुमुक्षु महासम्मेलन और अनेक नये आयोजन

आवास संपर्क
9009828282
संपर्क समय : रात 7 बजे से 9 बजे तक
व्हाट्सएप नं. 9752756445

आयोजक - श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई

संपर्क सूत्र : अशोक कुमार जैन, जबलपुर : 9424665300 वीनूभाई शाह, मुम्बई : 9757107511 महीपाल ज्ञायक, बांसवाड़ा : 9414103475 विराग शास्त्री, जबलपुर : 9300642434